पंजीकृत संख्या - DL/1526

सूक्ष्म संरक्षिका

स्व. मालती वर्मा

योजयते हिताय

माल्यार्थ फाउण्डेशन

(कला, साहित्य, स्वास्थ्य, पर्यावरण विकास, महिला सशक्तीकरण, कौशल विकास, शिक्षा एवं अध्यात्म को समर्पित राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के अंतर्गत पंजीकृत अखिल भारतीय संगठन)

नई दिल्ली - हरियाणा - उत्तरप्रदेश - उत्तराखंड- राजस्थान - बिहार - गुजरात - असम - मध्यप्रदेश- महाराष्ट्र

follow us :

www.maalyaarthfoundation.org

सन्देश

हिंदी विश्व को सर्वाधिक महाकाव्य देने वाले रचनाकार

आचार्य देवेन्द्र 'देव'

मुख्य संरक्षक, माल्यार्थ फाउण्डेशन | अंतरराष्ट्रीय कवि एवं साहित्यकार

परमपिता परमात्मा ने 'एकोऽहं बहुस्याम' की भावना से सृजित अपने इस चराचर जगत के प्रत्येक प्राणी, चाहे वह पशु-पक्षी हो, वनस्पति हो अथवा अन्य कोई जीवधारी, को कोई न कोई गुण अवश्य दिया है और वह गुण भी ऐसा जो दूसरों के काम आ सके। यह अलग बात है कि उसका धाता स्वयं उससे या उसके महत्व से परिचित न हो।

मनुष्य इन सब प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ (अशरफुलमख़लूकात) कहलाता है। इसलिए कि ईश्वर ने उसे गहन अनुभूति के साथ-साथ मुखर अभिव्यक्ति की भी क्षमता दी है जबकि अन्येतर को उसने वंचित रखा। मानव अखिल विश्व की प्रथम इकाई है। इसलिए हर सभ्य, सामाजिक व्यक्ति का कर्तव्य/धर्म बन जाता है कि वह इस दिशा में नैसर्गिक, शैक्षिक एवं प्रातिभ क्षमतानुसार अपनी सकारात्मक भूमिका, स्वयं निर्धारित और निर्वाहित करे।

महान योगी/सन्त स्वामी रामसुख दास जी का एक सूक्ति -वचन है:
अमन्त्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम्।
अयोग्यः पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः ॥

अर्थात् 'संसार में ऐसा कोई अक्षर नहीं है, जो मन्त्र न हो; ऐसी कोई जड़ी-बूटी नहीं है, जो औषधि न हो और ऐसा कोई मनुष्य नहीं है, जो योग्य न हो; परन्तु इनका योजक (जोड़ने वाला) दुर्लभ है।

हमारे देश और समाज में ऐसे अनेक सुशिक्षित और संस्कारित व्यक्तित्व हैं जो अपनी आजीविका से सम्बन्ध रखने वाली योग्यता के अतिरिक्त भी कला-उन्मुखी, लोक-हितकारिणी प्रतिभाएं, क्षमताएं रखते हैं जिनका देश और समाज, किंवा, समग्र वैश्विक मानवता के मानकीय विकास में उपयोग किया जा सकता है।

'आध्यात्मिक चेतना से सम्प्रेरित माल्यार्थ फाउण्डेशन' इसी भावना को लेकर गठित की गयी नितान्त अव्यावसायिक संस्था है जिसका उद्देश्य कला (संगीत/चित्र/नृत्य,नाट्य) साहित्य,शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कौशल विकास, महिला सशक्तीकरण,अध्यात्म जैसे आयामों के माध्यम से सक्षम व्यक्तित्वों की , क्षमता, योग्यता और सामर्थ्य का निहित प्रयोजनों से न केवल उपयोजन करना है प्रत्युत् उनको नि:स्वार्थ सेवाओं के अवसर देकर समाज में उन्हें समावृत, प्रतिष्ठित करना, दिव्य प्रेरणामूर्ति से ऊर्जस्वित उनके गुण-कौशल को एक मालिका (माला) में गूंथकर उसे राष्ट्रदेवता को अर्पित करना भी है। इसी कारण इसका नामकरण 'माल्यार्थ' किया गया है जिसके निहित उद्देश्य, इसके ध्येय-गीत में परिलक्षित होते हैं।

वस्तुत: यह उपक्रम राष्ट्रवाद के सपनों के रंग घोलकर युवकों के नव जागरण द्वारा समाज के अभ्युदय और नए भारत के निर्माण का संकल्प है।

ऐसे सत्संकल्प से जुड़े सभी भावकों का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए मैं, युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द द्वारा अपेक्षित युवा पीढ़ी का, इससे जुड़ने का आह्वान भी करता हूँ। इसी आधार पर हम 'मनुर्भव' का सन्देश प्रसारित करते हुए 'विश्व बन्धुत्व' और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की भारतीय अवधारणा को रूपाकारित कर सकते हैं।

शुभकामनाओं सहित:

संतुलन सधाकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाला उल्लेखनीय संगठन होगा माल्यार्थ फाउंडेशन

शिकागो (अमेरिका) के सर्वधर्म सम्मेलन में अपनी सारस्वत प्रतिभा, आध्यात्मिक योग्यता, सांस्कृतिक निष्ठा, सार्वभौमिक हितैषणा पर, चिंतनशीलता के बल पर विश्व समुदाय को चमत्कृत करने वाले युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द ने एक सौ तेईस वर्ष पूर्व कहा था कि आज का युग पर्वतों की गुफाओं में बैठकर एकांत मंत्र साधना सिद्धि का नहीं प्रत्युत लोकजीवन के बीच जाकर सुनिष्ठित कर्तव्यशीलता की अलख जगाने का है। युग ऋषि श्रीराम शर्मा आचार्य ने इसी आशय से व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्रनिर्माण के क्रम में भारत में विश्वगुरुत्व की पुनर्प्रतिष्ठा के सपने देखे थे।

माल्यार्थ फाउण्डेशन इन सभी परिकल्पनाओं में युगमनस्वी पं दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के सपनों के रंग घोलकर नव यौवन के जागरण, नये समाज के अभ्युदय और नये भारत के निर्माण का संकल्प साधकर चलने वाली सामाजिक संगठन है। पोषणकेंद्र के रूप में उदर का परिसीमन, किंतु स्वाभिमान का वक्ष चौडा रखने,जन-सरोकारी सक्रियता और कर्मठता से दीर्घ आयु की कामना करते हुए यह संस्था अपने लक्ष्य की पूर्ति हेतु भावकों की मानसिकता सरस बनाए रखकर उसके ओजस, तेजस और वर्चस के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयासरत है।

अपने दर्शन की प्रदर्शनियाँ लगाकर व्यवहार को बाजार का रूप देने वाले उपक्रमों की आज बहुतायत है। ऐसे वातावरण में हमारा लक्ष्य चुनौतीपूर्ण अवश्य है परन्तु समाज और राष्ट्र-जीवन में नये सोच, नये आयाम और नये कीर्तिमान स्थापित करने की चुनौतियाँ स्वीकार करने वाले सहयोगी भावकों की भी कभी कोई कमी नहीं रही। ऐसे हितैषी मनीषियों की सतत तलाश कर सामुदायिक प्रयासों के बल पर संतुलन साधकर आगे बढने और बढते रहने की हमारी कामना ही नहीं, अहर्निश प्रयास भी रहेंगे।

उदितेन्दु वर्मा 'निश्चल', संस्थापक/ राष्ट्रीय अध्यक्ष-माल्यार्थ फाउण्डेशन

माल्यार्थ फाउण्डेशन के कार्य-क्षेत्र

माल्यार्थ के उद्देश्य

1. संस्था के माध्यम से शैक्षिक,सामाजिक , शारीरिक एवं आत्मिक उन्नति के प्रति जनसामान्य को प्रेरित और प्रोत्साहित करना।

2. समाज मे व्याप्त वर्ग,वर्ण और जातीय भेदभाव मिटाकर लोगो मे राष्ट्रीयता की भावना को जगाना।

3. आर्थिक रूप से अक्षय,असहाय, विकलांग और महिलाओं के उत्थान के लिए कार्य करना।

4. समाज के कमजोर और पिछड़े वर्गों के विकास हेतु प्रयास करना।

5. निशुल्क सेवा शिविरों का आयोजन कर पर्यावरण, प्रदूषण-उन्मूलन, वृक्षारोपण और जनसंख्या नियंत्रण के लिए लोगो के बीच समय-समय पर जागरूकता-अभियान संचालित करना।

6. लोगो के शारीरिक,मानसिक और आत्मिक स्तर की समृद्धि हेतु संस्था द्वारा सरकार के विभिन्न विभागों जैसे पर्यावरण, उद्योग, प्रदूषण नियंत्रण, ग्राम्य विकास एवं सामाजिक कल्याण आदि की नीतियों के साथ समन्वय बैठाकर कार्य करना।

7. सर्वसमावेशी भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण।

8. साहित्य और विभिन्न कलाओं के माध्यम से अवसादग्रस्त समाज के बीच विश्वास जगाना।

9. गौरवपूर्ण अतीत से प्रेरित नई ऊर्जा-संचार के साथ वर्तमान समाज और राष्ट्र को स्वस्थ और जागरूक बनाते हुए पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना।

10. भारतीय समाज की प्रतिभाओं के विकास के लिए अवसर प्रदान करना और उनके अभिरुचि के क्षेत्रों से जुड़े वैचारिक व्यक्तित्वों से प्रशिक्षण हेतु शिविर आयोजित करना।

माल्यार्थ फाउण्डेशन
योजयते हिताय

माल्यार्थ कौशल-विमर्श के अंतर्गत आयोजन

माल्यार्थ कला/साहित्य-विमर्श के अंतर्गत आयोजन

माल्यार्थ नारी-विमर्श के अंतर्गत आयोजन

माल्यार्थ शिक्षा-विमर्श के अंतर्गत आयोजन

माल्यार्थ स्वास्थ्य-विमर्श के अंतर्गत आयोजन

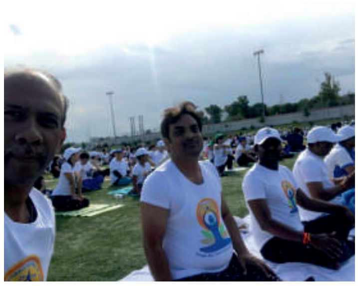

हिंदी विश्व को सर्वाधिक महाकाव्य देने वाले रचनाकार एवं माल्यार्थ फाउण्डेशन के मुख्य संरक्षक आचार्य देवेन्द्र देव के संपर्क / सानिध्यों के संदर्भ

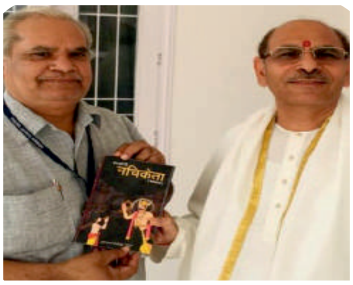
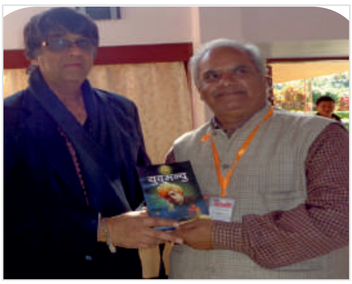

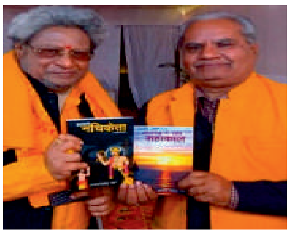

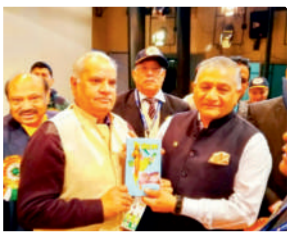

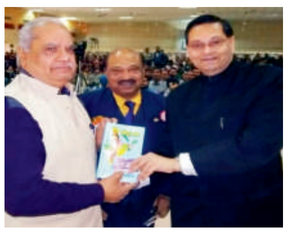

मुख्य संरक्षक	संरक्षक	संरक्षिका	संरक्षक
आचार्य देवेन्द्र 'देव'	मेजर जनरल जी. डी. बक्शी	डा.मृदुल कीर्ति	श्री किशन सोनी
अंतरराष्ट्रीय कवि एवं साहित्यकार, बरेली	पूर्व सैन्य अधिकारी , गुरुग्राम	अन्तरराष्ट्रीय संस्कृत-विदुषी, आस्ट्रेलिया	अन्तरराष्ट्रीय चित्रकार,झाँसी

राष्ट्रीय सलाहकार समिति सदस्य

श्री विनीत चौहान
अंतरराष्ट्रीय कवि, अलवर

डॉ. अजय शर्मा
प्रेरक वक्ता, भिवानी

श्री गजेन्द्र सोलंकी
अंतरराष्ट्रीय कवि, दिल्ली

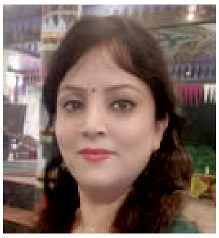
श्रीमती पूनम वर्मा
अंतरराष्ट्रीय कवयित्री, मथुरा

श्री अरविंद दत्त अब्दाली
पूर्व डी.आई.जी. (आई टी), बी.एस.एफ. नोएडा

श्री अमर सोनी
राष्ट्रीय डिजिटल चित्रकार , झाँसी

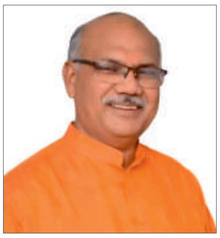
डॉ. अनिल शर्मा
वैश्विक शिक्षाविद्, रुड़की

श्री शम्भू ठाकुर
कानूनी सलाहकार, ग्रेटर नोएडा

बाबा संजीव आकांक्षी
प्रख्यात कलाविद् , मुरादाबाद

माल्यार्थ राष्ट्रीय कार्यकारिणी

डॉ. राजीव शर्मा
(पूर्व आईएएस अधिकारी) मार्गदर्शक

उदितेन्दु वर्मा
संस्थापक अध्यक्ष

डॉ. रंजन 'विशद'
वरिष्ठ उपाध्यक्ष

अनुराग तोमर
उपाध्यक्ष

अंकित कुमार
महासचिव

पूनम चौधरी
संयुक्त महासचिव

लक्ष्मण पंवार
कोषाध्यक्ष

सौम्या सोनी
सचिव

प्रियंका सोनी
सचिव

नीरज सोनी
मीडिया प्रभारी

सुदीप्तो अधिकारी
संयोजक
माल्यार्थ कौशल-विमर्श

अमितेश यादव
सह-संयोजक
माल्यार्थ कौशल-विमर्श

डॉ. रूपेश कुमार
संयोजक
माल्यार्थ स्वास्थ्य-विमर्श

सुदीप जायसवाल
संयोजक
माल्यार्थ कला-विमर्श

निधि वहल वत्स
संयोजिका
माल्यार्थ नारी-विमर्श

ब्रेजना हुडा
संयोजिका
माल्यार्थ शिक्षा-विमर्श

तूली रॉय
संयोजिका
माल्यार्थ पर्यावरण-विमर्श

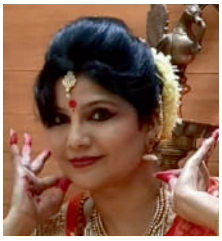

ट्विंकल शर्मा
संयोजिका
माल्यार्थ नृत्य-विमर्श

हर्ष दत्त
संयोजक
माल्यार्थ जागरूकता अभियान

सुमित स्वर्णकार
सदस्य

प्रेरक व्यक्तित्वों के संपर्क/सानिध्यों के संदर्भ

ध्येय गीत

माल्यार्थ है
लोक के कल्याण की,
साधना की परम्परा ।।

भाव और तकनीक का, यह संयुक्त उपक्रम ।
उन्नति का आधार है निष्ठा और परिश्रम ।
ज्ञान और विज्ञानाधारित संस्कृति का बल-विक्रम ।
दूर करेगा तन का, मन का, जीवन का हर संभ्रम ।
माल्यार्थ है,
बहुमुखी सामर्थ्य की
कामना की परम्परा ।।

स्वास्थ्य, कला, साहित्य के विहित समर्पण वाला ।
स्नेहाशीषों की पहन मंजु मालती-माला ।।
सद्वैचारिकता को जिसने सक्रियता में ढाला ।
शिक्षा का, गुण-कौशल का गुरुद्वारा और शिवाला ।।
माल्यार्थ है,
सतयुगी सहयोग की
भावना की परम्परा ।।

सिखलाता संघर्ष में खूब तपाना, तपना ।
पर, न सिखाता है कभी, छल की माला जपना ।
व्यसन, प्रदूषण-मुक्त, स्वावलम्बी हो भारत अपना ।
कदम मिलाकर चलें आँजकर,सभी, दृगों में सपना ।।
माल्यार्थ है,
सत्पथी कर्त्तव्य की,
धारणा की परम्परा ।।

सब में नैतिक बल रहे, बहे प्रेम की धारा ।
स्वच्छ, सकारात्मक, सरस, हो मन का गलियारा ।
नर-नारी जाग्रत, सशक्त हों, यही प्रयास हमारा ।
फाउण्डेशन जन-गण-मन को देगा सबल सहारा ।
माल्यार्थ है,
नव्यतम उत्कर्ष की
योजना की परम्परा ।।

रचयिता : आचार्य देवेन्द्र देव
मुख्य संरक्षक, माल्यार्थ फाउण्डेशन

माल्यार्थ फाउण्डेशन

योजयते हिताय

युग-पुरुष स्वामी विवेकानंद

नई सोच । नये आयाम । नई चुनौतियां

केंद्रीय प्रशासनिक कार्यालय :

माल-द्वीप, बी-1/ 1202, एस. आर. एस. रेजीडेंसी, सेक्टर-88, फरीदाबाद (हरियाणा)-121002 (भारत)

पंजीकृत कार्यालयः

माल-द्वीप, बी-100/3, दूसरा तल, गली नंबर-11, शशी गार्डन मयूर विहार फेज-1 पॉकेट-5 के पास, दिल्ली-110091

maalyaarthfoundatioon@gmail.com

+91-9599935527

28112024